...(व्यवधान)

श्री मोहन रावले (मुम्बई दक्षिण मध्य): अध्यक्ष महोदय, मैं एक ही सवाल प्रधान मंत्री जी से पूछना चाहता हूं। लाहौर-समझौता-यात्रा प्रधानमंत्री ने शुरू की। क्रिकेट हम खेलते थे। आतंकवाद की वजह से इसको बन्द किया। अप्रैल महीने में प्रधानमंत्री जी ने कहा था कि पाकिस्तान जब तक आतंकवाद खत्म नहीं करेगा, तब तक हम बातचीत नहीं करेंगे। मैं पूछना चाहता हूं कि अब बातचीत क्यों शुरू करने जा रहे हैं? जिसके हाथ खून से भरे हुए हैं, जिसके हाथ में खून लगा हुआ है, फिर आप क्यों पाकिस्तान से वार्ता करने जा रहे हैं।...*(व्यवधान)* पाकिस्तान हिन्दुस्तान में आतंकवाद बन्द करे, इस बारे में हम प्रधानमंत्री जी से जवाब चाहते हैं। हिन्दुस्तान को रियलाइज हुआ है पाकिस्तान आतंकवाद नहीं कर रहा है इसीलिए हिन्दुस्तान पाकिस्तान के साथ वार्ता करने के लिए तैयार हुआ है। ऐसा पाकिस्तान कहेगा तो आप क्या जवाब देंगे।

प्रधान मंत्री (श्री अटल बिहारी वाजपेयी): अध्यक्ष महोदय, इस चर्चा में जिन माननीय सदस्यों ने भाग लिया है, मैं उनको धन्यवाद देना चाहता हूं। कुछ मसले ऐसे होते हैं, जिन पर सदन में मोटे तौर पर एक आम राय बनती है। पाकिस्तान के साथ हमारे संबंध, उन संबंधों का प्रश्न एक ऐसा ही मामला है। मतभेद होते हैं, लेकिन मतभेद के बावजूद जो अंतिम लक्ष्य है, उसकी प्राप्ति के लिए सब मिल कर काम करते हैं और अंतिम लक्ष्य भारत की विजय, भारत का गौरव, भारत की कीर्ति और भारत की एकता है।

इस चर्चा में बहुत सी पुरानी बातें उठाई गई हैं। लाहौर से शुरू किया और वह कहानी आगे बढ़ती गई। लाहौर के लिए खुद को दोषी ठहराया जाऊं, मैं इसे स्वीकार नहीं करता। मित्रता के भाव से, पड़ोसी के नाते और पड़ोसी के साथ हमें निभाना है, जैसी भी निभे, अगर अच्छे संबंध बनाने का कोई अवसर प्राप्त होता है तो उसे खोना नहीं चाहिए। हमारा विकास आंतरिक और बाहरी शांति पर निर्भर है। हम नहीं चाहते कि युद्ध के लिए भारी हथियार खरीदे जाएं, देश के साधनों का बड़ा पैमाने पर उपयोग हो, लेकिन जब आजादी के लिए खतरा पैदा होता है, जब अखंडता खतरे में पड़ती है तो सब कुछ दांव पर लगाने का काम होता है, देश की रक्षा करनी पड़ती है। मैंने पाकिस्तान के मित्रों से कई बार कहा है कि हम मित्र बदल सकते हैं, मगर पड़ोसी नहीं बदल सकते हैं। न आप कहीं जा सकते हैं, न हम कहीं उठ कर जा सकते हैं। हमें यहीं रहना है। अब एक रास्ता यह है कि दोस्त पड़ोसी के नाते रहें, दोस्ती के नाते रहें और दूसरा एक रास्ता लड़ते रहें, भिड़ते रहें, लेकिन रहें, दुनिया को हंसने का मौका दें, अपनी जनता की भावनाओं को भी ठीक से न समझने के कारण गलत रास्ते अपनाएं। इसलिए जहां तक संभव हो पड़ोसी के साथ मित्रता होनी चाहिए। इसीलिए मैं लाहौर गया। यह कहना गलत है कि लाहौर जाने से पहले पूर्व तैयारी नहीं थी। आगरा जाने से पहले भी कहा गया कि पूर्व तैयारी नहीं थी। इसका क्या मतलब है? सरकार चलती है, सरकार का ढांचा बना हुआ है, विदेश मंत्रालय मेरे आने से बदल नहीं गया, जो हमारे कूटनीतिज्ञ चतुर हैं, मैं समझता हूं कि इसमें हमारे मित्र सहमत होंगे, वे अफसरों पर गाज गिराते हैं लेकिन विदेश मंत्रालय वाले विदेश विभाग वालों को संरक्षण देते हैं। हमारी तैयारी थी, लेकिन बीच में जो कारगिल का प्रश्न पैदा हुआ, वह वहां की सरकार और फौज के सेनापति का आपस का झगड़ा था। दोनों देशों ने मिल कर लाहौर समझौते के बाद जो घोषणा पत्र निकाला था, उसमें कहा था कि हम शांति के साथ बातचीत करेंगे, मामले हल करेंगे और इस पर सहमति हुई। उस घोषणा पत्र में कश्मीर का भी उल्लेख नहीं था क्योंकि दोनों देशों में जो चर्चा हुई उसका नतीजा यह निकला कि कश्मीर का मामला उलझा हुआ है, हम इसकी बात न करें। अच्छा यह है कि हम और प्रश्नों पर अपना ध्यान लगाएं और उन्हें हल करते हुए आगे बढ़ें।

श्री मणि शंकर अय्यर: मेरे पास लाहौर डिक्लरेशन है। उसमें कहा गया है कि

[अनुवाद]

"... सहमत हुए हैं कि उनकी सरकारें अपने प्रयास बढ़ाएंगी..."

अध्यक्ष महोदय: प्रधान मंत्री की बात पूरी होने के बाद मैं आपको प्रश्न पूछने की अनुमति दे सकता हूं। अब आप कृपया बैठिए।

श्री मणि शंकर अय्यर: "...जम्मू-कश्मीर मुद्दे सहित सभी मुद्दे हल किये जाएं..."

[हिन्दी]

आप कह रहे हैं कि कश्मीर का जिक्र नहीं है। यह आपके सामने है।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी: अध्यक्ष महोदय, उसमें जो जिक्र है, मैं वह जानता हूं। वह जिस रूप में है, आप भी देख सकते हैं। आगरा की तरह से लाहौर में कश्मीर को मुख्य मुद्दा नहीं बनाया गया था। वह अब बना दिया गया है।

श्री मणि शंकर अय्यर: सबसे पहला मुद्दा है। आपने इस पर हस्ताक्षर किये हैं।

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय: कृपया उन्हें अपना उत्तर पूरा करने दें।

[हिन्दी]

श्री अटल बिहारी वाजपेयी: जो बातचीत हुई है, मैं उसका हवाला दे रहा हूं। जनरल मुशर्रफ साहब जब आगरा आये और जो चर्चा चली, उन्होंने सारी ताकत इस बात पर लगा दी कि कश्मीर के बारे में उनकी बात मान ली जाये। अब यह भी निकाल दिया कि यह बात नहीं हुई। आगरा से जनरल मुशर्रफ को खाली हाथ जाना पड़ा। मुझे दोषी ठहराया जा रहा है कि आपने गलती की, आपने तैयारी नहीं की। अगर तैयारी नहीं होती तो करगिल में पाकिस्तान के हमले का सफलतापूर्वक सामना नहीं किया जाता। हमने पाकिस्तान की योजना सफल नहीं होने दी। उनके यहां गृह-कलह इतना बढ़ गया कि उनके प्रधान मंत्री को त्यागपत्र देना पड़ा। वे मिलकर काम नहीं कर सके। यह बात मैं इसलिये कह रहा हूं कि जो प्रयास किये जा रहे हैं, वे अच्छी नीयत से किये जाते हैं। कभी सफल होते हैं, कभी विफल होते हैं। युद्ध-विराम कई बार किया गया। इस बात को लेकर सद्भावना है कि दोनों पड़ौसी देशों, विशेषकर जम्मू कश्मीर में मित्रता का वातावरण बने लेकिन यह मंशा पूरी नहीं हुई। आतंकवादियों में मतभेद हो गये, वे बंट गये, टूट गये। आज उनकी क्या स्थिति है? मैं इसके विस्तार में नहीं जाना चाहता। अब यह कहा जा रहा है कि आपने कहा था कि जब तक सीमा-पार से आतंकवाद समाप्त नहीं होगा, आप बात नहीं करेंगे। हां, कहा था लेकिन हम सीमा पार से आतंकवाद रोकना चाहते थे, वह हमारा लक्ष्य है। उस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये हमने काम करने का फैसला किया और इतने जोरदार तरीके से काम किया कि सारी दुनिया के कुछ देशों को छोड़कर बाकी देश इस राय के हो गये कि सीमा पार से जो आतंकवाद हो रहा है, वह बंद होना चाहिये। हमें विश्व का जनमत अपने साथ में लेने में सफलता मिली। हम यह नहीं कहते कि आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई कोई दूसरा लड़ेगा लेकिन हमें समझौता करने के लिये गुंजाइश मिली, रास्ता निकला और इसलिये यह तय हुआ कि अब जब कश्मीर में चुनाव हो गये हैं और यह इतनी बड़ी घटना है, इसका सही मूल्यांकन होना चाहिये, मुझे ऐसा लगता है।

श्रीमती सोनिया गांधी ने जम्मू कश्मीर के चुनाव का उल्लेख तक नहीं किया। जम्मू कश्मीर चुनाव एक नया परिच्छेद शामिल करने वाला परिवर्तन है। लोगों ने गोलियां खाईं और वोट देने गये। पाकिस्तान के सारे प्रयास विफल हो गये। उस दिन कश्मीर में मैंने उमड़ती भीड़ को देखा। मैं कश्मीर पहले भी जा चुका हूं। कश्मीर में मैंने तरह-तरह के स्वागत देखे हैं लेकिन चुनाव के बाद जम्मू कश्मीर में जो सभा हुई, मुफ्ती साहब ने समर्थन दिया, हमने उनका स्वागत किया। उस सभा में जो दृश्य था, उसने उस पड़ौसी को चौंकाया होगा। भले ही न चौंकाया हो लेकिन उस दृश्य ने हमारे हृदय में एक उत्साह पैदा किया कि जिस जनता के भरोसे हम खड़े हैं, वह जनता हमारे साथ है। साम्प्रदायिकता का जहर काम नहीं करेगा, लोग अमन चाहते हैं। लोग शान्ति के साथ रहना चाहते हैं। इतने लोग चुनाव में मारे गये, कितने घायल हुये। अगर आप उन सब की गिनती करेंगे तो ऐसा लगेगा कि जम्मू कश्मीर में लोगों ने अपनी जान पर खेलकर बहुत बड़ी कुर्बानी की है। उस दिन मुझे लगा कि अब एक नया कदम उठाने की जरूरत है। उसी समय एक अंतर्राष्ट्रीय घटना हुई, जिसमें मैं विस्तार से नहीं जाना चाहता। लेकिन जिस तरह से इराक पर हमला हुआ, जिस तरह से यूनाइटेड नेशंस बिना असर के छोड़ दिया गया, निष्प्रभावी बना दिया गया, उससे मुझे लगा कि अब जो छोटे देश हैं, विकासशील देश हैं, गुटनिरपेक्ष देश हैं, इन्हें भविष्य के बारे में सोचना चाहिए। मैं इसे परिवर्तन की दिशा मानता हूं। इराक में अमरीका का आक्रमण और जम्मू-कश्मीर में जनता की जीत, ये दो अलग-अलग दिखाई देने वाली घटनाएं हैं, मगर ये जुड़ी हुई हैं।...*(व्यवधान)*

श्री अवतार सिंह भडाना (मेरठ): इसमें बी.जे.पी. की हार हुई।...*(व्यवधान)*

श्री अटल बिहारी वाजपेयी: यहां हार-जीत की बात नहीं हो रही है। हम हमेशा हारने के लिए तैयार हैं और हम हारते हैं इसलिए तो यहां बैठे हैं और अब आप वहां पहुंच गये हैं। ...*(व्यवधान)*

श्री अवतार सिंह भडाना: कभी हम भी वहां बैठते थे और आप यहां बैठते थे। हम फिर वहां आ जायेंगे।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी: कोई बात नहीं है, लेकिन मैं इसमें नहीं पड़ना चाहता। अध्यक्ष महोदय उस दिन मुझे लगा कि कोई नई पहल शुरू करने की जरूरत है। हम यह रट लगा सकते थे, जैसा बार-बार आपने कहा था क्या आतंकवाद रुक गया और मैं अगर कहूं कि आतंकवाद कम हो गया तो फिर आप कहेंगे कि कम होने से काम नहीं चलेगा, पूरा बंद होना चाहिए। मगर इसका जवाब दिया जायेगा कि सारे आतंकवादी किसी एक के कब्जे में नहीं है। आतंकवादी भी बंटे हुए हैं। आतंकवादियों की भी अलग-अलग राजनीति है। साढ़े आतंकवादी कहीं एक सूत्र से चलते हैं। अगर ऐसी है तो यह सचमुच में गंभीर बात है, मगर वास्तविकता ऐसी है नहीं, तो इसका भी इशारा मिला कि परिवर्तन हो रहा है और जम्मू-कश्मीर की जनता ने एक दो टूक फैसला किया। हमने कहा यह वक्त है दोस्ती का हाथ बढ़ाने के लिए,

बशर्ते कि पाकिस्तान सीमापार से आतंकवाद को छोड़े और जो ढांचा वहां बना हुआ है, उसे समाप्त करे। बातचीत तो अभी शुरू नहीं हुई है, यह तो पूर्वाभ्यास है। लेकिन बातचीत में जब पाकिस्तान के प्रधानमंत्री से टेलीफोन पर बात हुई और उन्होंने कहा कि आइये हम दोनों मिलकर हाकी खेलने का फैसला करें, तो मैंने कहा कि आप बहुत अच्छी हाकी खेलते हैं, मैं जानता हूं, आप हाकी के कप्तान रहे हैं, अपने खिलाड़ियों का चयन करते थे। आप हाकी की बात कह रहे हैं तो मैं समझ सकता हूं, लेकिन एक बात मेरी समझ में नहीं आती जमाली साहब, मान लीजिए भारत और पाकिस्तान का हाकी का मैच हो रहा है, भीड़ लगी है, सारा शहर उमड़ पड़ा है और उसी समय खबर आती है कि आतंकवादियों ने जम्मू में हमला करके 50 निर्दोष पुरुषों, महिलाओं और बच्चों को मौत के घाट उतार दिया है। वह कैसा खेल होगा, उस खेल की प्रतिक्रिया क्या होगी, क्या वह खेल मित्रता को पैदा करेगा, जो भी हम सोचें। इसलिए मैंने कहा कि यह आतंकवाद बंद होना चाहिए। अब उन्होंने जो कुछ कहा उसे मैं दोहराना नहीं चाहता। मगर उन्होंने कहा कि आतंकवाद एक ऐसा अपराध है, एक ऐसा जुर्म है, जिससे आजकल हम भी परेशान है, हम भी अपने देश में लड़ रहे हैं और हम मिलकर आतंकवाद से लड़ेंगे। इसके बाद सोचा गया कि आदान-प्रदान होना चाहिए। जिन माननीय सदस्यों ने चेतावनी दी है, मैं उन्हें विश्वास दिलाता हूं कि हम जरूर सावधानी बरतेंगे, हम भी दूध के जले हैं, छाछ को फूंक-फूंक कर पीयेंगे। लेकिन हम जड़ हो जाएं, निष्क्रिय हो जाएं, कोई पहल न करें, कोई कदम न उठाएं, हाथ पर हाथ रखकर बैठ जाएं, यह तो भारत जैसे बड़े देश को शोभा नहीं देता। विश्व में भारत का एक स्थान है। शांति के प्रति हमारी जो सम्पर्ण की भावना है, उससे सब परिचित हैं। पाकिस्तान के आतंकवाद को समर्थन नहीं मिला है। लोगों का समर्थन जम्मू-कश्मीर के लोगों ने जो चुनाव में दिखाया है, उसके साथ है। जो भी विदेशी आए थे और जो चुनाव में देखने गए थे, उन्होंने इस बात को माना कि लोगों ने अपनी राय प्रकट कर दी है, शांतिपूर्ण ढंग से प्रकट कर दी है, गोलियों का सामना करते हुए कर दी है और उसकी कद्र की जानी चाहिए। दुनिया उनकी कद्र करेगी। कम से कम हम तो उसको जितना महत्व देना चाहिए, दें। एक नया अध्याय शुरू हुआ है। आइए, हम उसको मिलकर बढ़ाएं। कोई नहीं चाहता कि जम्मू-कश्मीर चला जाए। सोनिया जी ने यह बात कैसे कही, मेरी समझ में नहीं आता। जम्मू-कश्मीर नहीं जाएगा। कौन कह रहा है जाएगा? जो यह कहेगा कि जाने वाला है, वह यहां रह सकता है? यह किसी ने नहीं कहा। पता नहीं किसने..., मैं उसमें नहीं जाना चाहता। जम्मू-कश्मीर को कोई तोड़ नहीं सकता सही बात है। जम्मू-कश्मीर के तीन हिस्से हैं, अलग अलग डिविजन हैं। वह मिलकर बरसों से रह रहे हैं। नई व्यवस्था होगी तो उसमें भी साथ रहेंगे।

श्री मुलायम सिंह यादव: नई व्यवस्था क्या होगी, वह बता दीजिए। लद्दाख, कश्मीर और जम्मू बंटवारे की जो पुरानी संघ परिवार की और अमेरिका की राय है, क्या वही आप बोल रहे हैं?

श्री अटल बिहारी वाजपेयी: क्या कह रहे हैं?

श्री मुलायम सिंह यादव: नई व्यवस्था में क्या तीनों का बंटवारा करना चाहते हैं?

श्री अटल बिहारी वाजपेयी: अरे मुलायम सिंह जी, आप भी अपनी रट छोड़ते नहीं हैं। डा. लोहिया पाठ पढ़ा गए कि महासंघ होना चाहिए। महासंघ न उस समय हुआ, न अब होगा।

श्री मुलायम सिंह यादव: महासंघ नहीं होगा तो कभी भी दोस्ती नहीं होगी, यह बात लिख लीजिए मैं आज सदन में कह रहा हूं।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी: यह आपकी राय है। हमारी राय अलग है। और अलग-अलग राय होते हुए भी हम और आप मित्र हैं।

श्री मुलायम सिंह यादव: हम तो आपका स्वागत ही कर रहे हैं, साथ दे रहे हैं।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी: केवल महासंघ नहीं, अब तो दुनिया के देश इकट्ठा होकर बड़े-बड़े संघ बना रहे हैं।

श्री मुलायम सिंह यादव: अब बता दीजिए कि यह आपका अंतिम प्रयास है या लगातार रहेगा?

श्री अटल बिहारी वाजपेयी: सारा यूरोप एक हो रहा है। जो पहले कम्युनिस्ट देश थे वे भी शामिल हो रहे हैं।

श्री मुलायम सिंह यादव: आपका अंतिम प्रयास है या लगातार रहेगा?

श्री अटल बिहारी वाजपेयी: यह युग का धर्म है। देश अब बंटने नहीं चाहिए, टुकड़े नहीं होने चाहिए और आर्थिक विकास के लिए सब मिलकर काम करें, इसके लिए देशों में एकता होना भी बहुत जरूरी है।

श्री सोमनाथ चटर्जी: सही बात है।

श्री रामदास आठवले (पंढरपुर): हम भी आपके साथ हैं।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी: कामरेड भी हमारा साथ दे रहे हैं।

श्री सोमनाथ चटर्जी: आप नहीं चाहते? क्या आप मेरा समर्थन नहीं चाहते?

अध्यक्ष महोदय: रामदास आठवले साथ हैं, तो दूसरे किसी की जरूरत नहीं है।

श्री सोमनाथ चटर्जी: आठवले साथ रहेंगे तो जनता आपके साथ रहेगी।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी: कुछ और प्रश्न उठाए गए थे। पाकिस्तान डी-न्यूक्लियराइजेशन की बात कर रहा है। साउथ एशिया को वह डी-न्यूक्लियराइज करना चाहता है। हमें यह प्रस्ताव स्वीकार नहीं है। पाकिस्तान का एटामिक कार्यक्रम इंडिया स्पैसेफिक है, हमारा पाकिस्तान स्पैसेफिक नहीं है। हमें केवल पाकिस्तान की चिन्ता नहीं है, हमें और भी आस-पास के देशों में क्या वातावरण बनता है, इसकी चिन्ता है। हमने एक न्यूक्लियर डाक्ट्रीन एडाप्ट की है। उसमें हमने कहा है कि हम पहले हमला नहीं करेंगे। पाकिस्तान ने इस तरह की घोषणा नहीं की। उसने ऐसा करने से मना कर दिया है। तो फिर नो वार पैक्ट का मतलब क्या है? मल्होत्रा जी ने ठीक कहा कि नो प्राक्सी वार पैक्ट होना चाहिए।

अध्यक्ष महोदय, और भी प्रश्न उठाए गए थे। मैं उन सबके विस्तार में नहीं जाना चाहता हूं। लेकिन यह कहना चाहूंगा कि दुनिया संकटों से घिरी है और उसमें यदि निश्चित आधार पर आगे बढ़ने का फैसला नहीं होता, तो कठिनाई होगी।

शांति की खोज कोई अपराध नहीं है। उसमें सफलता मिलती है या विफलता, यह बात अलग है। कौन विफलता चाहता है। लेकिन हम विफल हो जाएंगे, इसलिए उसे न करें, यह ठीक नहीं है। भारत जैसा विशाल देश इस तरह से फैसला नहीं कर सकता और न स्वतंत्र भारत ने कभी इस तरह से फैसले किए हैं।

हमने शिमला समझौते का विरोध नहीं किया था। इसलिए विरोध नहीं किया था क्योंकि उसमें दोस्ती थी। हमने उस समय इसलिए विरोध किया था क्योंकि शिमला समझौते के बाद भी जम्मू-कश्मीर का मामला हल नहीं हुआ।

अब अलग-अलग विचार हो सकते हैं, मतभेद हैं, उनको प्रकट किया जा सकता है, लेकिन एक देश के रूप में जब भारत की ओर दुनिया देखती है, तो वे आशा करते हैं कि हम एक स्वर में बोलेंगे, एक आवाज में बोलेंगे और जो मतभेद हैं, उनको आपस में बैठकर तय करेंगे।

अध्यक्ष महोदय, मैं सबको धन्यवाद देता हूं और आशा करता हूं कि इस सम्बन्ध में जो भी मतैक्य बना है, उसको आगे चलाया जाएगा।

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय: चर्चा अब समाप्त हुई।

अब सभा कल 9 मई, 2003 को पूर्वाह्न ग्यारह बजे पुन: समवेत होने तक के लिए स्थगित होती है।

सायं 6.42 बजे

तत्पश्चात् लोक सभा शुक्रवार, 9 मई 2003/वैशाख 19, 1925 (शक) के पूर्वाह्न ग्यारह बजे तक के लिए स्थगित हुई।